फरीदाबाद
मजदूर समाचार
जीवन की लौ को सृजनात्मक तौर पर प्रचुर करने का एक माध्यम
नई सीरीज नम्बर 287 1/- मई 2012

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.com >
डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

बताना-जानना-जुड़ना आवश्यक है

कहीं कुछ नहीं हो रहा की बातें कितनी थोथी हैं यह इस अंक में ही **ग्लोब कैपेसिटर, थीम एक्सपोर्ट, लखानी इण्डिया, हरसोरिया हैल्थकेयर, सुजुकी पावरट्रेन** के संक्षिप्त विवरणों में भी देखा जा सकता है। हर समय, हर जगह बहुत कुछ हो रहा है। पिछले महीने ही गुड़गाँव में ही एक तरफ ओरियन्ट क्राफ्ट फैक्ट्री में मजदूरों का गुस्सा फूट पड़ा था तो दूसरी तरफ निर्माण मजदूरों का असन्तोष उबल पड़ा था। मजदूर कितना-कुछ कर रहे हैं। इसलिये बात "कुछ नहीं हो रहा" की नहीं है बल्कि बात क्या-क्या हो रहा है, कैसे-कैसे हो रहा है की है। जो हो रहा है उससे जुड़े प्रश्नों पर विचार करने की बात है ताकि बेहतर कर सकें।

मोटे तौर पर तीन तरीकें नजर आते हैं :

●फैक्ट्री अथवा कम्पनी के दायरे में मामलों को देखना। कानूनी ढाँचे में समाधान ढूँढना। नेताओं-प्रतिनिधियों पर निर्भर होना। श्रम विभाग जाना हो, चाहे पुलिस-प्रशासन से वास्ता हो, या विधायक-मन्त्री के पास जाना हो, या फिर अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों तक पहुँचने के लिये उन फैक्ट्रियों के नेताओं से सम्पर्क करना हो – सब मामलों में नेता ही करेंगे अथवा नहीं करेंगे। सब में नहीं हो तो भी अधिकतर मामलों में यह तरीका मजदूरों को दलदल में धँसाता है।

●दूसरा तरीका समय-समय पर मजदूरों के गुस्से का विस्फोट है। एक तो यह लगातार बढ रहे सामाजिक असन्तोष की अभिव्यक्ति है। मजदूर जानते हैं कि सरकारी कार्यालयों, कोर्ट-कचहरियों से उन्हें न्याय नहीं मिलेगा। और, आम लोगों को नेताओं से आशायें अब नहीं के बराबर हैं। इस अर्थ में गुस्से के विस्फोट हालात का प्रत्यक्ष उत्तर लगते हैं। लेकिन, आमतौर पर विस्फोट अल्प अवधि वाले होते हैं और हमें बहुत सीमित स्थान प्रदान करते हैं। समस्या के विश्व-व्यापी सामाजिक समस्या होने के दृष्टिगत यह विस्फोट प्रेरक की भूमिका ही निभा सकते हैं, उससे अधिक नहीं।

●ऐसे में मजदूर सामान्य तौर पर अन्य राहें तलाशते रहते हैं। इन राहों मे मुख्यतः कदम सामुहिक होते हैं और सोच-विचार के बाद योजना बना कर उठाये जाते हैं। मजदूरों के कदमों का असर सीधा और तत्काल पडता है। आमतौर पर ऐसे में मैनेजमेन्ट शीघ्र ही पीछे हटती हैं जैसे कि हाल ही में ग्लोब कैपेसिटर में हुआ। मजदूर जब इस प्रकार कदम उठाते हैं तब कम्पनियों को आक्रमण करने के लिये टारगेट नहीं मिलते। लेकिन, रियायतें देने को मजबूर हुई कम्पनी शीघ्र ही मजदूरों की सामुहिकता को कमजोर करने के लिये नये कदम उठाती है, जैसे कि ग्लोब कैपेसिटर में ठेकेदार के जरिये 100 नये मजदूर रखना। इसलिये कम्पनी के आधार पर योजना बना कर सामुहिक कदम उठाने वाले मजदूरों के लिये कम्पनी की सीमा के पार जाना एक अनिवार्य आवश्यकता है। यह एक बहुत बड़ी बात लग सकती है लेकिन :

– ग्लोब कैपेसिटर की ही बात करें तो ग्लोब के बाहर की फैक्ट्रियों के मजदूरों के साथ जोड़ बनाने की सम्भावना उनके सामने थी। उत्पादन कार्य के जरिये वे सुपर इलेक्ट्रो फिल्म्स मजदूरों से जुड़े थे। दोनों फैक्ट्रियों के मजदूरों ने अलग-अलग कदम उठाये तब भी एक-दूसरे पर असर पड़ा। लेकिन, दोनों ही फैक्ट्रियों के मजदूरों ने आपस में जुड़ने के लिये सक्रिय कदम नहीं उठाये। इसी प्रकार पड़ोस की अभिराषी इम्पैक्स के मजदूरों से पड़ोस के नाते तथा एक जैसे हालात के दृष्टिगत ग्लोब कैपेसिटर मजदूर उन से जुड़े थे। उनके कदम से ग्लोब मजदूरों ने सीखा भी था। लेकिन, अभिराषी इम्पैक्स मजदूरों के साथ जोड़ बनाने के लिये ग्लोब कैपेसिटर मजदूरों ने सक्रिय कदम नहीं उठाये। ग्लोब कैपेसिटर की ही बात जारी रखें तो इसका उत्पादन एल जी, सैमसंग, जी ई मोटर, ओरियन्ट फैन के संग-संग पी एस आई, मेवे, आल्को से जुड़ा है।

उत्पादन प्रक्रिया विश्व-स्तर पर जुड़ी है। जगह-जगह बने औद्योगिक क्षेत्र इस उत्पादन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण कड़ी हैं। फैक्ट्री मजदूरों को एकत्र करती है। औद्योगिक क्षेत्र अनेकों फैक्ट्रियों को एकत्र करते हैं। विश्व-भर में फैले औद्योगिक क्षेत्र एकत्रित मजदूरों के केन्द्र बने हैं। लेकिन इस प्रकार एकत्र किया जाना मजदूरों में अनेक प्रकार के अलगाव भी लिये है। उत्पादन एकत्र करना तथा सामुहिकता लिये है और नियन्त्रण के लिये अलगाव अनिवार्य आवश्यकता है। एकत्र के बीच अलगाव एक अत्यन्त नाजुक सन्तुलन लिये है। और, यह सन्तुलन अधिकाधिक नाजुक बन रहा है। मजदूरी-प्रथा के आरम्भ से, दो सौ वर्ष से मजदूरों के बीच जोड़ बनाने की सम्भावना रही है और यह सम्भावना बढती जा रही है। हमारे सामने प्रश्न इस सम्भावना को वास्तविकता में बदलने का है।

✱जुड़ने-जोड़ने का सिलसिला दीर्घकाल से चला आ रहा है। यह प्रत्येक के सामाजिक पहलू को दर्शाता है। मजदूरों के जुड़ने-जोड़ने के अनुभव भी दो सौ वर्ष पार जाते हैं। इस दौरान हुये परिवर्तनों ने मजदूरों की सँख्या बहुत बढा दी है और जुड़ने-जोड़ने के लिये विश्व-व्यापी ठोस धरातल पैदा कर दिया है। इसलिये जुड़ने-जोड़ने, तालमेल बढाने के लिये :

– अपनी बातें बताना। बताने से होगा क्या? सब जानते हैं! किसको बतायें? क्यों बतायें? कैसे बतायें? इस प्रकार के प्रश्न और भाव हम सब में उठते रहते हैं। बताने पर हुये नुकसान हमें सशंकित करते हैं।

हमारे विचार से सामान्य स्थिति हो चाहे असामान्य स्थिति, अपने जीवन के, अपने कार्य के सामाजिक पहलूओं पर चर्चायें करना, एक-दूसरे को बताना शायद ही कोई निजी हानि लिये है। मिलना-बैठना-चर्चायें करना तो हमारे जीवन का विस्तार लिये है। सामान्य तौर पर हम अपने जैसों के बीच रहते हैं इसलिये किसको बताना और कैसे बताना कोई गुत्थी नहीं रहती। लेकिन, जैसे ही कोई असामान्य स्थिति बनती है, जैसे कि किसी फैक्ट्री के मजदूरों का मिल कर बाहर निकलना अथवा बाहर धकेल दिया जाना, तब किसको बताना है और कैसे बताना है बहुत महत्वपूर्ण बन जाते हैं। हमारे विचार से असामान्य स्थिति में आये मजदूरों के लिये सबसे महत्वपूर्ण है अन्य फैक्ट्रियों-कार्यस्थलों के मजदूरों को अपनी बातें बताना। और, बताने के तरीके सहज, सरल, आसान, सस्ते होने चाहियें: गत्तों पर अपनी बातें लिख कर दस-दस गज की दूरी पर उन रास्तों पर खड़े होना जहाँ से बड़ी सँख्या में मजदूर अपने-अपने कार्यस्थलों को जाते हैं ऐसा एक तरीका लगता है। लोग जब ड्युटी जा रहे हों अथवा ड्युटी से छूट रहे हों तब यह करना बनता है।

– जानने के बारे में भी "क्यों जानना है? जानने से होगा क्या? क्या-क्या जानना है? कैसे जानना है?" वाले प्रश्न हमारे सम्मुख रहते हैं। हम जो करते हैं वह किस चेन का हिस्सा है, हमारे से आगे वाले और पीछे वाले

(बाकी पेज तीन पर)

फैक्ट्रियों में हालात की एक झलक

हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन 1.1.2012 से डी. ए. के 203 रुपये जुड़ने के बाद : *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4847 रुपये (8 घण्टे के 186 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 5497 रुपये (8 घण्टे के 211 रुपये)।* एक पता : श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ।

सेन्डेन विकास मजदूर : "प्लॉट 65 सैक्टर-27 ए. फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 60 स्थाई मजदूर और चार ठेकेदारों के जरिये रखे 950 मजदूर **मारुति सुजुकी, निसान, महिन्द्रा, टाटा, हिन्दुस्तान, होण्डा** कारों के एयर कन्डीशनर बनाते हैं। कहने को ए और बी शिफ्ट में फैक्ट्री 17 घण्टे खुली रहती है पर यहाँ 24 घण्टे काम होता है – रविवार को साँय 7 बजे से काम बन्द। काम का भारी दबाव है, प्रतिदिन 4000 से ज्यादा एयर कन्डीशनर फैक्ट्रियों को डिस्पैच होते हैं। महीने-भर से डिस्पैच पूरी नहीं हो रही.. .... मारुति सुजुकी में पूरा माल नहीं पहुँचने पर शिकायत के साथ-साथ काफी जुर्माना लगाते हैं। गोदाम न सेन्डेन विकास में है और न मारुति सुजुकी में – यहाँ से माल वहाँ सीधे उत्पादन लाइन पर जाता है। दिक्कतें पता करने के लिये रात के समय बडे-बडे अफसरों की ड्युटी लगाई गई। स्थाई मजदूर ए-शिफ्ट में ही हैं और सन् 2009 में 4 साथियों को नौकरी से निकाले जाने के बाद से ओवर टाइम नहीं करते। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर बी-शिफ्ट में दोपहर बाद 2½ बजे लगते और अगले रोज सुबह 6½ छूटते। शनिवार को 2½ बजे लगते यह मजदूर रविवार को साँय 6½ छूटते। ए-शिफ्ट में ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर 8½ घण्टे बाद छूट जाते। डिस्पैच में दिक्कत का कारण......बी-शिफ्ट में 15 घण्टे काम से मजदूर थक जाते हैं। इसलिये साहबों का समाधान : मई-आरम्भ से ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट! इस प्रकार शनिवार को दूसरी शिफ्ट के मजदूर लगातार 24 घण्टे ही काम करेंगे जिसके लिये 50 रुपये तथा दो बार नाश्ता प्रलोभन हैं। ओवर टाइम का भुगतान कम्पनी सिंगल रेट से करती है। टाइम स्टडी में जहाँ 500 पीस बनते हैं वहाँ मैनेजमेन्ट 1000 पीस बनाने को कहती है। अकुशल श्रमिकों को सी एन सी बैन्डिंग मशीनों पर लगा देते हैं। उँगलियाँ कटती रहती हैं – एक दिन प्रायवेट अस्पताल (सनफ्लैग) में इलाज करवाते हैं, फिर मजदूर अपने पैसों से उपचार करवाये। उँगली कटे मजदूर को फिर काम पर रखते भी नहीं हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और चोट लगने पर एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते। ई.एस.आई. व पी. एफ. के पैसे सब मजदूरों की तनखा से काटते हैं। पुर्जों के रूप में कम्प्रेसर जापान से आता है। पाइप कोरिया से। होज पाइप **ब्रिजस्टोन** से, पैड **हिण्डालको** से। हिस्से-पुर्जे समूह की सहायक कम्पनियों से : **प्रणव विकास, केनमोर विकास, साटा, आर पी एस, गेले** से।"

गौरव इन्टरनेशनल श्रमिक : "236 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में सिलाई विभाग में सुबह 9½ से रात 11½ की एक शिफ्ट है। फिनिशिंग विभाग में 11½-11½ घण्टे की दो शिफ्ट हैं। रात में ठेकेदार के जरिये रखे 150 मजदूरों में 7-8 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। कम्पनी द्वारा भर्ती मजदूरों की महीने में शिफ्ट बदलती है पर ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों की शिफ्ट नहीं बदलती। रात में काम करने वालों की नींद पूरी होती ही नहीं। रात वालों को ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से भी कम, 20 रुपये प्रतिघण्टा है और ठेकेदार हर महीने इन में से भी 150-200 रुपये का घपला करता है। मार्च की तनखा 16 अप्रैल को दी।"

विनय ऑटो कामगार : "प्लॉट 52 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 15-20 स्थाई मजदूर तथा तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 400 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **प्रिकॉल, जे एन एस, हीरो, मिण्डा, सुमन ऑटो** के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। महिला मजदूरों की सुबह 9 से साँय 7½ की ड्युटी। रविवार को भी काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से भी कम, 18 रुपये प्रतिघण्टा। गड़बड कर हर महीने 100-200 रुपये खा भी जाते हैं। अधिकतर मजदूरों को हैल्पर कहते हैं, तनखा 4550 रुपये। भोजन के 350 रुपये काटते हैं – कैन्टीन में भोजन बहुत खराब।"

विक्टर इंजिनियरिंग वरकर : "प्लॉट 84 संजय मेमोरियल इन्डस्ट्रीयल एस्टेट, मुजेसर स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 8 की ड्युटी है, रविवार को दोपहर 1 बजे तक। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। महिला हैल्परों की तनखा 3000 रुपये और पुरुष हैल्परों की 3500 रुपये। पैंतीस मजदूरों में ई.एस.आई. 6 की है, पी.एफ. किसी की नहीं। शौचालय बहुत गन्दा।"

कैलाश रिबन मजदूर : "403 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में 600 मजदूर काम करते हैं। सप्ताह में शिफ्ट बदलती है पर रविवार को भी काम होता है.... शनिवार को रात 8 बजे कार्य आरम्भ करने वालों की रविवार को साँय 4 बजे तक ड्युटी रहती है जो कि बहुत भारी पड़ती है, तीन दिन तक तबीयत खराब रहती है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। रविवार को काम के लिये कम्पनी 20 रुपये खुराकी के और 5 रुपये नाश्ते के देती थी पर दिसम्बर 2011 से यह पैसे देने बन्द कर दिये हैं। कैजुअल वरकर 300 हैं और इनकी ई. एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। कैजुअल वरकरों में हैल्परों की तनखा 3500-4000-4200 रुपये और कारीगरों की 5000 से ज्यादा। रात को झपकी के नाम पर महीने में 8-10 घण्टे काट लेते हैं। रंगाई विभाग में रसायनों की भारी बदबू।"

ई.पी.आई. प्लास्टिक श्रमिक : "प्लॉट 283 सैक्टर-6, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में काम करते 125 मजदूरों में 85 की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, और तनखा 3500 रुपये – कह रहे हैं कि अप्रैल से 3800 कर देंगे। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, ओवर टाइम का भुगतान मात्र 10-15 रुपये प्रति घण्टा। यहाँ **होण्डा, कैरियर, हिताची, पिजो ग्लास** का काम होता है।"

ईस्टर्न मेडिकिट कामगार : "गुड़गाँव में उद्योग विहार फेज-1 में 195, 196, 205, 206 और फेज-2 में प्लॉट 292 स्थित फैक्ट्रियों से अधिकतर कैजुअल वरकर निकाल दिये हैं और जो 200-250 बचे हैं उन्हें मार्च की तनखा आज 27 अप्रैल तक नहीं दी है। स्टाफ को तो कम्पनी ने फरवरी और मार्च की तनखायें आज 27 अप्रैल तक नहीं दी हैं। स्थाई मजदूरों को मार्च की तनखा 21 से 25 अप्रैल के दौरान दी। इधर 15 अप्रैल से कम्पनी ने स्थाई मजदूरों की 12-12 घण्टे की ड्युटी कर दी है।"

प्योग्नाम श्रमिक : "666 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में स्थाई मजदूर एक भी नहीं है, 20-25 कैजुअल वरकर और एक ठेकेदार के जरिये रखे 600 मजदूर सुबह 8½ से रात 8½ तक रोज काम करते हैं। रात 12 बजे तक रोक लेते हैं और शनिवार को फुल नाइट – शनिवार को सुबह 8½ काम आरम्भ करते हैं और रविवार की सुबह 5 बजे छूटते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम, 21 रुपये प्रति घण्टा। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. राशि काटते हैं, ई.एस.आई. का कच्चा कार्ड और फण्ड के पैसों के लिये दौड़ाते हैं – कहते हैं कि यहीं फिर काम करो तब फार्म भरेंगे। साहब गाली बहुत देते हैं।"

न्यू स्वान वरकर : "प्लॉट 100 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 125 स्थाई मजदूर और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 175 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **हीरो मोटरसाइकिलों** के फिल्टर बनाते हैं। हर रविवार को भी काम – महीने में एक इतवार को फैक्ट्री दिन में बन्द रहती है। ओवर टाईम का भुगतान सिंगल रेट से भी कम, 20 रुपये प्रतिघण्टा।"

लुमैक्स ऑटोमैटिक सिस्टम कामगार : "प्लॉट 46 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 40-50 स्थाई मजदूर और ठेकेदार के जरिये रखे 450 वरकर 12-12 घंण्टे की दो शिफ्टों में **मारुति सुजुकी** तथा **होण्डा** के प्लास्टिक पार्ट्स बनाते हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से।" ■

निमन्त्रण

रविवार, 27 मई को सुबह 10 से देर साँय तक बातचीत के लिये आइये। मजदूर लाईब्रेरी में आपका स्वागत है। रास्ते के बारे में अप्रैल अंक देखें।

महीने में एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें। अन्यथा भी, चर्चाओं के लिए समय निकालें।

जरूरी है नई राहें तलाशना

✱ गुड़गाँव में उद्योग विहार फेज-4 में प्लॉट 110-111 स्थित **हरसोरिया हैल्थकेयर** फैक्ट्री में राहत के लिये मजदूर 2010 में एक यूनियन से जुड़े। मार्च 2011 में मैनेजमेन्ट और यूनियन के बीच तीन वर्षीय समझौता हुआ। अप्रैल में मैनेजमेन्ट ने उकसाया और 27 अप्रैल को हुये मैनेजमेन्ट-यूनियन एमझौते ने मजदूरों की परेशानी बढाने की राहें खोली। कुछ विवरण 'मजदूर समाचार' के मई 2011 अंक में है।

अप्रैल 2011 में हरसोरिया हैल्थकेयर फैक्ट्री में 252 स्थाई मजदूर और 203 कैजुअल वरकर थे। यूनियन से जुड़ने के दौरान ही कम्पनी ने कई कैजुअल वरकरों को ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर बना दिया था। अप्रैल 2011 के समझौते में जो 9 स्थाई मजदूर बाहर छोड़े थे उनमें से तीन को कम्पनी ने नौकरी से बरखास्त कर दिया। कैजुअल वरकरों को ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों में बदलने की रफ्तार बढाई और एक ठेकेदार की जगह 6 ठेकेदार कर दिये। कैजुअल से ठेकेदार के जरिये रखा बनाने और फिर इस ठेकेदार से उस ठेकेदार का बनाने का विरोध करने पर 1.1.2012 को 40 कैजुअल वरकरों को नौकरी से निकाल दिया। धीमे उत्पादन और अनुशासनहीनता के आरोप में 9 स्थाई मजदूरों को 19.12.2011 को निलम्बित किया। उत्पादन कम किया के आरोप में नवम्बर, दिसम्बर और जनवरी 2012 की तनखाओं में 35 से 43 प्रतिशत की कटौती की। दबाव और लालच के जरिये 22 स्थाई मजदूरों को स्टाफ वाले बनाया। और, निलम्बित 9 में से 3 को बरखास्त किये जाने का पता 23.4.2012 को लगा।

ए-शिफ्ट के छूटने से पहले और बी-शिफ्ट के आरम्भ होने से पहले, 24 अप्रैल को दोपहर पौने दो बजे ए तथा बी शिफ्ट के मजदूर एक साथ फैक्ट्री में बैठ गये। मारुति सुजुकी मानेसर मजदूरों की तरह हरसोरिया हैल्थकेयर मजदूरों ने फैक्ट्री पर से कम्पनी का कब्जा नहीं हटाया — स्टाफ फैक्ट्री के अन्दर आता-जाता रहा। सी-शिफ्ट मजदूरों को मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री में प्रवेश नहीं करने दिया और उन मजदूरों ने गेट के बाहर धरना आरम्भ कर दिया। स्थाई मजदूरों के संग फैक्ट्री में बैठे ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को एक-एक, दो-दो करके फैक्ट्री से बाहर निकाला जाने लगा।

27 अप्रैल को श्रम विभाग में वार्ता के बाद फैक्ट्री में यूनियन के नेताओं को फैक्ट्री में प्रवेश करने नहीं दिया। और, रात 9 बजे मजदूरों को धमकाने के लिये मैनेजमेन्ट 50 बाउन्सरों को फैक्ट्री में लाई। यूनियन ने थाने में शिकायत की। पुलिस आई। मैनेजमेन्ट ने पिछले दरवाजे से बाउन्सर फैक्ट्री से निकाल दिये। और तब...... यूनियन ने मजदूरों को फैक्ट्री से बाहर निकल जाने को कहा। अगले दिन, 28 अप्रैल को यूनियन ने मजदूरों को फैक्ट्री गेट छोड़ कर उप श्रमायुक्त के कार्यालय के बाहर बैठने को कहा। प्रदर्शन। स्टाफ और स्टाफ में किये स्थाई मजदूर तो फैक्ट्री में थे ही, ठेकेदारों के जरिये नये मजदूर भी मैनेजमेन्ट फैक्ट्री में ले जाने लगी। पहली मई से फैक्ट्री में उत्पादन आरम्भ।

गुड़गाँव में पुरानी कचहरी के पास उप श्रमायुक्त कार्यालय के बाहर बैठे मजदूर। फैक्ट्री में उत्पादन आरम्भ। आक्रोश। और, स्टाफ से मारपीट का आरोप — 21 मजदूरों के खिलाफ एफ आई आर दर्ज। "जमानत करवायें कि भूख हड़ताल करें" की ऊहापोह। मैनेजमेन्ट कभी कहती है कि 18 स्थाई मजदूरों को बरखास्त कर दिया है, और कभी कहती है कि 4 को छोड़ कर अन्दर आ जाओ।

✱ आई.एम.टी. मानेसर में सैक्टर-8 में प्लॉट 1 स्थित **सुजुकी पावरट्रेन ट्रान्समिशन एण्ड इन्जन** तथा सैक्टर-3 में प्लॉट 26 बी स्थित **सुजुकी पावरट्रेन कास्टिंग** फैक्ट्रियों में तीन निलम्बित मजदूरों के बरखास्त कर दिये जाने की जानकारी मिलने पर 17 अप्रैल को बी तथा सी शिफ्ट के मजदूर 12½ बजे रात को एकत्र हो कर बैठ गये। रात 1½ बजे यूनियन लीडर फैक्ट्री पहुँचे और बोले कि कोई निलम्बित अथवा बरखास्त होगा तो उनकी जिम्मेदारी नहीं होगी....... मरे मन से बी-शिफ्ट के मजदूर फैक्ट्रियों से बाहर निकले और सी-शिफ्ट मजदूरों ने काम आरम्भ किया।

मारुति सुजुकी मानेसर मजदूरों के साथ सुजुकी पावरट्रेन मजदूरों ने सक्रिय साझेदारी की। अक्टूबर में फैक्ट्रियों पर से कम्पनियों का कब्जा हटाने में मारुति सुजुकी और सुजुकी पावरट्रेन मजदूर साथ-साथ थे। सरकार के दबाव में मारुति सुजुकी लीडरों ने 19 अक्टूबर को समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये थे पर इसे गुप्त रखा गया था क्योंकि सुजुकी पावरट्रेन लीडर दबाव में नही आये थे। सुजुकी पावरट्रेन के तीन लीडरों को वार्ता से हटा कर, अलग कमरे में रख कर, 21 अक्टूबर को बाकी लीडरों ने समझौते पर हस्ताक्षर किये थे। मारुति सुजुकी के तीस लीडर हिसाब ले गये लेकिन सुजुकी पावरट्रेन के अड़ने वाले तीन लीडर निलम्बित रहे।

सुजुकी पावरट्रेन के स्थाई मजदूरों ने 10 नवम्बर 2011 को आम सभा में चर्चायें की। बार-बार बुलाने पर भी समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले यूनियन लीडर वहाँ नहीं पहुँचे। चर्चा निलम्बित तीन को ड्युटी पर लेने पर केन्द्रित रही। भरोसा नहीं रहा, यूनियन के चुनाव करवाओ की बात को टाला गया और 3 को ड्युटी पर लिये जाने से पहले मैनेजमेन्ट से दीर्घकालीन समझौता नहीं करने की व्यापक सहमति बनी। पर........9 नवम्बर को ही मैनेजमेन्ट-यूनियन दीर्घकालीन समझौता हो जाना दर्शाया गया। निलम्बित के खिलाफ घरेलू जाँच 2 दिसम्बर को पूरी हो गई। तीन को ड्युटी पर लेने के लिये दबाव डालने के वास्ते सुजुकी पावरट्रेन की दोनों फैक्ट्रियों में मजदूरों ने 30-31 जनवरी को चाय का बहिष्कार किया और फिर 1-2 फरवरी को भोजन का बहिष्कार किया। मैनेजमेन्ट ने भोजन बहिष्कार के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की धमकी दी। और, मारपीट तथा धमकाने के आरोप में 20-25 मजदूरों के खिलाफ दो मजदूरों की तरफ से 1 फरवरी को पुलिस द्वारा एफ आई आर दर्ज।

10 से 13 अप्रैल को यूनियन ने भोजन बहिष्कार करवाया...... और 17 अप्रैल को सुजुकी पावरट्रेन मैनेजमेन्ट ने तीन निलम्बित मजदूरों को बरखास्त कर दिया। पंजीकृत यूनियन के संविधान अनुसार बरखास्त मजदूरों को 21 अप्रैल को पदों से हटा दिया और उनकी जगह नये लोगों को पद दिये गये।

सुजुकी पावरट्रेन मजदूरों के दबाव को कम करने के लिये मारुति सुजुकी और फियेट में डीजल इन्जन सप्लाई का समझौता...... और, 6 महीने से सुजुकी पावरट्रेन की कास्टिंग फैक्ट्री में टैन्ट लगा कर 50-60 पुलिसवाले रह रहे हैं तथ ट्रान्समिशन एण्ड इन्जन फैक्ट्री में टैन्ट में 15 पुलिसवाले रह रहे हैं। यूनियन के प्रान्तीय लीड ने 27 अप्रैल को बरखास्तगी पर सम्बन्धित यूनियनों की मीटिंग बुलाई। सुजुकी पावरट्रेन के यूनियन लीडर उस मीटिंग में पहुँचे ही नहीं। सुजुकी पावरट्रेन की फैक्ट्रियों में 850 स्थाई मजदूर, 1000 ट्रेनी, 300 अप्रेन्टिस और ठेकेदारों के जरिये रखे 800 मजदूर काम करते हैं। यूनियन संविधान के अनुसार स्थाई मजदूर ही यूनियन के सदस्य बन सकते हैं।■

1 अप्रैल 2012 से **दिल्ली सरकार** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन : अकुशल श्रमिक को मासिक 7020 रुपये (8 घण्टे के 270 रुपये); अर्धकुशल श्रमिक को मासिक 7748 रुपये (8 घण्टे के 298 रुपये); कुशल श्रमिक को मासिक 8528 रुपये (8 घण्टे के 328 रुपये)। स्टाफ में दसवीं से कम को मासिक 7748 रुपये (8 घण्टे के 298 रुपये); दसवीं उत्तीर्ण को मासिक 8528 रुपये (8 घण्टे के 328 रुपये) ; स्नातक और अधिक को मासिक 9282 रुपये (8 घण्टे के 357 रुपये)। 25—50 पैसे का पोस्टकार्ड डालने के लिये एक पता: श्रम आयुक्त, 5 शाम नाथ मार्ग, दिल्ली—110054

बताना-...... (पेज एक का शेष)

कौन-कौन हैं, हमारी चेन कहाँ तक फैली है, अन्य चेनों के साथ इस चेन के क्या सम्बन्ध हैं — इस प्रकार की जानकारी प्राप्त करना सामान्य और असामान्य, दोनों स्थितियों में हमारे लिये महत्वपूर्ण होती है। क्या करें और क्या नहीं करें, कब करें, कैसे करें के निर्णय में इन जानकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अपने अथवा अन्य कार्य क्षेत्रों में हो रहे परिवर्तनों को जानना आवश्यक है ताकि वर्तमान के नाजुक सन्तुलन को अपने माफिक बदल सकें। भिन्नताओं को जानना और यह जानने के प्रयास करना कि इन से पार कैसे पायें।

बताना और जानना जुड़ने-जोड़ने, तालमेल बढाने के लिये आवश्यक हैं। प्रत्येक की इसमें भूमिका है। इस सन्दर्भ में 'मजदूर समाचार' के जरिये भी आइये बताना-जानना-जुड़ना बढायें। सम्पर्क करें।■

करते हैं - और करिये - बताइये

★दिल्ली में ओखला औद्योकि क्षेत्र फेज-2 में एफ-24/4 स्थित **थीम एक्सपोर्ट** फैक्ट्री में दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं देते – हैल्परों की तनखा 5200 और चैकरों की 6500 रुपये तथा सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे के 250 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 300 मजदूरों में एक की भी नहीं। ड्युटी सुबह 9½ से रात 1 बजे तक रोज, अगली सुबह 6 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से। तनखा हर महीने देरी से..... मार्च की तनखा 16 अप्रैल को दोपहर 1 बजे तक देनी आरम्भ नहीं की तो मजदूरों ने प्रोडक्शन इनचार्ज से पूछा। जनरल मैनेजर से पता करने की कह कर साहब गया और आ कर बोला कि 4 बजे से तनखा देंगे। "चार बजे पैसे देने शुरू करोगे तो 5½ तक कैसे बाँट दोगे ?" जिस दिन तनखा मिलती है उस रोज मजदूर साँय 5½ छुट्टी कर लेते हैं। मजदूरों ने जनरल मैनेजर से बात करवाने को कहा तो इनचार्ज विभाग छोड़ कर भाग गया। इस पर मजदूर फैक्ट्री से बाहर निकलने लगे। गार्डों ने रोका तो उन्हें धकेल कर बाहर निकले। बगल में एफ-25/1 में थीम एक्सपोर्ट की दूसरी फैक्ट्री और हैड ऑफिस है। मजदूर वहाँ पहुँचे तो गार्डों ने गेट अन्दर से बन्द कर लिया। गेट को धक्के......कुछ मजदूर दीवार फाँद कर अन्दर गये और गेट खोल दिया। मजदूरों की भीड़ हैड ऑफिस में। जनरल मैनेजर ने माहौल शान्त करने का प्रयास किया और बोला कि एक-दो दिन में तनखा दे देंगे। फिर मामला हाथ से निकलता देख साहब ने पुलिस को फोन किया। दो पुलिसवाले आये और मजदूरों को धक्के दे कर निकालने के चक्कर में एक पुलिसवाला गिर गया। पास में स्थित ओखला थाने से दो जिप्सी में 20 पुलिसवाले पहुँचे। इस बीच आसपास की फैक्ट्रियों के मजदूरों और बगल की संजय कॉलोनी से पहुँचे लोगों की भीड़ एकत्र हो गई। सड़क जाम। वहाँ सड़क बन रही है, बहुत पत्थर पड़े हैं, लोगों ने पत्थर उठा लिये। पुलिसवाले डर कर बाहर ही रहे। थानेदार ने तब 5½ बजे तक तनखा दिलवाने की जिम्मेदारी ली। साहब लोग 4 बजे बैंक गये और 5 बजे से पैसे बाँटने शुरू कर दिये, रात 8 तक सब को तनखा दे दी।

★फरीदाबाद में इन्डस्ट्रीयल एरिया में प्लॉट 30/8 स्थित **ग्लोब कैपेसिटर** फैक्ट्री में रविवार, 8 अप्रैल को कोई भी मजदूर काम के लिये नहीं पहुँचा-पहुँची। सोमवार, 9 अप्रैल को सुबह 8 बजे फैक्ट्री पहुँच कर मजदूर अपनी-अपनी लाइन पर बैठे। आपस में बातचीतें, काम आरम्भ नहीं किया। कम्पनी का चेयरमैन घूम रहा था, किसी से कुछ कह नहीं रहा था। सुपरवाइजरों को 11 बजे फोन पर कहा कि 1 बजे मीटिंग होगी। ऊपर वाली मंजिल पर वायर कटिंग विभाग में मीटिंग में कम्पनी के सब अधिकारी और दिन की शिफ्ट के मजदूर एकत्र हुये। चेयरमैन ने एक घण्टे भाषण दिया : बैंकों से 60 करोड़ रुपये कर्ज ले रखा है, हमारा घर भी गिरवी रखा है, सरकार को टैक्स देते हैं, अपने रिस्क पर बाहर देशों से आर्डर लाते हैं...... सोचने-विचारने के लिये कुछ समय दो। कोई मजदूर कुछ नहीं बोली-बोला। भोजन अवकाश के लिये 2 बजे समय दिया। ढाई बजे धीरे-धीरे काम शुरू और 4½ छुट्टी कर निकले। दो गेट पार कर मुख्य द्वार पर पहुँचे तो गार्डों ने गेट नहीं खोला और फोन किया। मैनेजिंग डायरेक्टर पहुँचा और बोला कि समय माँगा है, समय दो, फैसला होने पर बतायेंगे कि कितने घण्टे ड्युटी होगी, काम करो। पाँच बजे काम शुरू..... 6½ निकल लिये। उस दिन काम नाम मात्र का हुआ। "समय माँगा है तो काम करते हैं" – 10 अप्रैल से काम आरम्भ। दो-तीन दिन बाद मैनेजिंग डायरेक्टर बोला कि पिता (चेयरमैन) ने 25 प्रतिशत उत्पादन बढाने की कही है, फिर तुम्हारी बात करेंगे। प्रोडक्शन नहीं बढायेंगे, 10 घण्टे की जगह 8 घण्टे की ड्युटी करो, दो वर्ष से अधिक समय वाले कैजुअल वरकरों को स्थाई करो, ई.एस.आई. व पी.एफ. लागू करो, त्यौहारी छुट्टियाँ दो, हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन दो। अगले दिन फिर यही बातें। प्रतिशत में उत्पादन नहीं बढायेंगे, 600 की जगह 650 पीस, 700 की जगह 800 पीस, और 800 की जगह 800 पीस ही..... 16 अप्रैल को कम्पनी राजी हुई। दो सौ स्थाई मजदूरों की तनखा में 1900-2200 रुपये की वृद्धि की। कैजुअल वरकरों की तनखा (8 घण्टे 26 दिन) 3640 रुपये की जगह 4850 रुपये की। लेकिन, 350 महिला व पुरुष कैजुअल वरकरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. लागू नहीं की और किसी कैजुअल को स्थाई नहीं किया। वेतन वृद्धि से स्थाई मजदूर शान्त हुये हैं पर कैजुअल वरकरों की परेशानियाँ बढ गई हैं। मैनेजिंग डायरेक्टर 23 अप्रैल से सुबह 7½ आ कर गेट पर खड़ा हो जाता है, फैक्ट्री में कैमरे चालू कर दिये हैं। इधर एक ठेकेदार के जरिये 100 मजदूर भर्ती कर लिये हैं – इनकी भी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, और तनखा कैजुअलों के बराबर। छोटी-छोटी बात पर अप्रैल में 10-12 पुराने कैजुअल वरकर निकाल दिये हैं। शिफ्ट सुबह 8 से रात 8½ और रात 8 से अगली सुबह 8 की। रविवार को सुबह 8 से साँय 6½ तक काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।

.......सैक्टर-4 में प्लॉट 3 ए स्थित **सुपर इलेक्ट्रो फिल्म्स** से ग्लोब कैपेसिटर में फिल्म आती हैं और उस फैक्ट्री में भी 10 घण्टे कार्य को मैनेजमेन्ट 8 घण्टे कार्य कहती रही है। वहाँ से फिल्में नहीं आने के कारण यहाँ दो दिन उत्पादन बहुत प्रभावित हुआ। सुपर इलेक्ट्रो फिल्म्स मजदूरों ने भी 10 की जगह 8 घण्टे की ड्युटी करवाने के लिये हमारे बाद काम बन्द किया।

......ग्लोब कैपेसिटर के सामने स्थित **अभिराषी इम्पैक्स** फैक्ट्री में वाहनों तथा मशीनों के मीटर बनाते 450 मजदूरों में 250 महिला और 200 पुरुष हैं। अभिराषी इम्पैक्स मैनेजमेन्ट भी 10 घण्टे कार्य को 8 घण्टे का कार्य कहती थी। दो अप्रैल को सुबह पुरुष मजदूर तो काम करने फैक्ट्री में चले गये पर 250 महिला मजदूरों ने फैक्ट्री में प्रवेश नहीं किया। बहुत जल्दी मैनेजिंग डायरेक्टर आया था और ड्युटी 8 घण्टे की तथा तनखा 5000 रुपये कह कर सब महिला मजदूरों को फैक्ट्री में ले गया था। अभिराषी इम्पैक्स महिला मजदूरों के कदम का ग्लोब मजदूरों पर तत्काल प्रभाव पड़ा था।

★फरीदाबाद में सैक्टर-24 में प्लॉट 265 स्थित **लखानी इण्डिया वरदान समूह** की फैक्ट्री में मार्च की तनखा नहीं दिये जाने पर 21 अप्रैल को मजदूरों ने काम ढीला किया। फिर सोमवार, 23 अप्रैल को सुबह 8 बजे से काम आरम्भ ही नहीं किया। कोई अधिकारी कुछ नहीं बोला। अपनी मर्जी से मजदूरों ने लन्च करना शुरू किया। जनरल मैनेजर से मजदूर बोले, "मकान मालिक किराया माँगता है। राशन वाला पैसे माँगता है। तनखा दो।" एक लड़की (महिला मजदूर) बोली, "माँ का एक्सीडेन्ट हो गया है। तनखा दो।" जनरल मैनेजर बोला, "पैसे नहीं हैं। दो-चार दिन रुक जाओ।" तनखा नहीं दी और 24-25-26 अप्रैल को भी पूरे दिन काम बन्द रखा। मजदूर 25 अप्रैल से मस्ती करने लगे थे और 27 को मजदूरों का झुण्ड सुबह 8 बजे एक विभाग से दूसरे विभाग गया। स्टूलों से खेले, मशीनों से मस्ती की, कचरे के डिब्बों को फुटबाल बनाया, तेल के खाली डिब्बों को ढोलक बनाया और एच. आर. विभाग चले। मजदूरों को रोकने के लिये गार्डों ने विभागों के शटर गिराये। यह खेल सुबह 8 से 12 बजे तक चला। कम्पनी ने 3 बजे चुपचाप नोटिस लगाया : 28 अप्रैल से 6 मई तक छुट्टी रहेगी, 7 मई को ड्युटी आना। कुछ मजदूर बिना जाने 4½ बजे फैक्ट्री से निकले और कुछ को पता चल गया था तब भी वैसे ही निकल गये। फिर 8½ से 5 ड्युटी वालों ने नोटिस देखा और गार्ड से बोले कि नोटिस हटाओ। हमारी तनखा कौन देगा? एच.आर. अधिकारी बोला कि 8 व 8½ वाले, सब 8 बजे आ जाना।

28 अप्रैल को फैक्ट्री गये। गेट पर किसी ने नहीं रोका। जो नहीं आये थे उन्हें फोन कर बुलाया। फैक्ट्री में 800-1000 लड़के-लड़कियाँ हो गये। काम तो बन्द था ही, खूब हल्ला-गुल्ला हुआ। एच.आर. विभाग गये, वहाँ कोई अधिकारी नहीं था, ताला लगा था। कैन्टीन में बेन्चों को खेल की वस्तुयें बनाया। प्लॉट 144 के मजदूर 10-10½ बजे प्लॉट 265 में आ गये। बहुत मजदूर हो गये। प्लॉट 144 और प्लॉट 265 के मजदूर फैक्ट्री के बाहर सड़क पर आ गये। सड़क जाम। पुलिस की जिप्सी आई। लड़के-लड़कियाँ सड़क पर बैठ गये, लेट गये। यह दो घण्टे चला। फिर सब मजदूर प्लॉट 144 गये और वहाँ से श्रम मन्त्री के घर।■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट **RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14**
दिल्ली से मुद्रित किया।